नन्दलाल बोस और उनके शिष्यों द्वारा चित्रित संविधान की छवियों का चित्रकला की दृष्टि से अध्ययन

रजनी बाला एवं अनूप

सार

भारतीय संसद पुस्तकालय में एक विशेश हीलियम से भरे डिब्बे में रखे गए हस्त–निर्मित भारतीय संविधान के पन्ने काले चमड़े में बंधे हैं, जिन पर सोने के पैर्टन उकेरे गए हैं। यह न केवल देश के कानून को परिभाषित करता है, बल्कि इसके लेखाकों ने भारतीय इतिहास और विरासत को सांझा करने की भी कल्पना की है। इसलिए प्रत्येक शब्द को प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा द्वारा सावधानी पूर्वक सुलेखित किया गया है। पुस्तक को चित्रित करने के लिए कला भवन शांतिनिकेतन के कलाकार नंदलाल बोस और उनके शिष्यों का चयन किया गया था। दुनिया के किसी भी संपूर्ण संप्रभु राज्य के लिए सबसे लंबे लिखित संविधानों में से एक भारतीय संविधान के 22 भागों में से प्रत्येक पृष्ठ एक चित्र के साथ शुरू होता है। कालानुक्रमिक रूप से नंदलाल बोस और उनके शिष्यों ने मोहनजोदड़ों से लेकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम तक भारत के इतिहास का चार्ट तैयार किया। इसी तरह प्रस्तावना पृष्ठ पर राममनोहर सिन्हा और कृपालसिंह शेखावत द्वारा ब्लू पोटरी में चित्रित किया गया तथा दीनानाथ भार्गव ने राष्ट्रीय प्रतीक अशोक के सिंह स्तंभ का चित्र बनाया है। शोध पत्र के लिए प्राथमिक व द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग किया गया है। यह शोध संविधान के साथ–साथ कला के लिए महत्वपूर्ण है।

मूल शब्द: संविधान; छवि; चित्र.

भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर व सविधान

Shahare, M(1987, 6-11) के अनुसार भीमराव रामजी अंबेडकर का जन्म महू सेना छवनी मध्य प्राप्त (वर्तमान मध्य प्रदेश)में एक दलित परिवार में हुआ। उनके परिवार की निम्न जाति की स्थिति के कारण उनका प्रारंभिक जीवन भेदभाव और अस्पष्टता से भरा रहा है। अंबेडकर का शैक्षिक जीवन बहुत ही समृद्धशाली रहा। स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत उन्होंने एलिफिंस्टन कॉलेज से अर्थशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान में स्नातक की डिग्री, कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री और 1923 में कोलंबिया विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की थी।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका महत्वपूर्ण रही। डॉ. भीमराव अंबेडकर जी ने भारतीय दलित को उनका अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया और अछूतों के लिए राजनीतिक सुरक्षा उपाय करने की दिशा में काम किया। अंबेडकर ने दलितों के अधिकारों के लिए लड़ने वाले सामाजिक आंदोलन में भी बढ़चढकर भाग लिया। इसके साथ उन्होंने संविधान निर्माण में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्हें भारतीय संविधान के जनक के रूप में जाना जाता है। अपने पद और विधानसभा में अपने हस्तक्षेप और भाषणों के कारण अंबेडकर भारत की संविधान निर्माण प्रक्रिया में एक प्रमुख व्यक्ति बन गए, वह विधानसभा की सबसे महत्वपूर्ण मसौदा समिति

के अध्यक्ष और अन्य महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य भी थे। डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर जिन्हें बाबा साहेब के नाम से भी जाना जाता है, एक भारतीय राष्ट्रवादी, न्यायविद्, दलित, राजनीतिक नेता, कार्यकर्ता, दार्शनिक, विचारक, वैज्ञानिक, इतिहासकार, वक्ता, कुशल लेखक, अर्थशास्त्रीय विद्वान, संपादक, क्रांतिकारी और भा. रत में बौद्ध धर्म के पुनरूत्थानवादी तथा भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार भी रहे। उन्होंने अपना पूरा जीवन सामाजिक भेदभाव चतुर्थवर्ण की व्यवस्था, मानव समाज को चार वर्णों में विभाजित करने वाली हिंदू वर्गीकरण और भारतीय जाति व्यवस्था के खिलाफ लड़ने में व्यतीत किया।

भारत के सचित्र इतिहास के रूप में संविधान

Mustafi (2021, 2) के अनुसार 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ है। इस अत्यधिक प्रतिष्ठित कार्य संस्था की विषय वस्तु को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र– भारत की रीड़ माना जाता है। भारत का संविध ाान कला का आकर्षण नमूना है, संविधान एक ऐसा दस्तावेज है जो नागरिकों के रूप में हमारे अधिकारों की रक्षा करता है। लेकिन संविधान का प्रत्येक भाग कला से शुरू होता है, जिससे हमारे 5000 साल पुराने इतिहास का पता लगता है। संविधान की हाथ से चित्रित पांडुलिपि में पाठ के साथ–साथ चित्र भी शामिल हैं। इसके निर्माण करने में लगभग 4 वर्ष के उपरांत स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहलाल नेहरू, कला के दिग्गज नंदलाल बोस, जो बाद में कला भवन के प्रिंसिपल बने, के प्रबल अनुरोध पर विश्व भारती ने भारत के संविधान को चित्रित करने का कठिन कार्य किया। चित्रण सदस्यों में ब्योहर राम मनोहर सिंहा शामिल थे, जो संविधान की प्रस्तावना को चित्रित करने में योगदान दिया।

''दीनानाथ भार्गव ने भारत के प्रतीक के चित्रण में सहायता तथा प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा ने इस महान रचना के पूरे पाठ के लिए सुलेख किया और उनके हस्ताक्षर प्रेम इस पांडुलिपि के सभी 221 पृष्ठों पर दिखाई देते हैं। नंदलाल बोस की सहायता करने वाले अन्य कलाकारों में कृपाल सिंह शेखावत, ए. पेरूमल और विनायक शिवराम शामिल थे। इनमें से कुछ कलाकार कला भवन में बोस के छात्र थे। हालांकि नंदबोस बास ने अपने तीन बच्चों–बिस्वरूप बोस, गौरी भांजा और जमुना सेन ने भी पुस्तक में चित्रों में योगदान दिया। सविंधान के आगे और पीछे के कवर पर जटिल स्वर्ण का पैटर्न प्रसिद्ध अजंता चित्रों से लिया गया है।'' ;ञ्नेजंपिए 2021ए 2द्ध

नंदलाल बोस

संविधान में भारतीय संस्कृति विरासत को उकेरने में नंदलाल बोस ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नंदलाल बोस को आधुनिक भारतीय कला के दिग्गजों में से एक माना जाता है।' 'नंदलाल बोस का जन्म 3 सितंबर 1883 को बिहार के जिला मुंगेर (खड़्कपुर) में हुआ। उनके पिता पूर्णचंद्र बोस स्थापत्य शिल्पी थे तथा दरभंगा के राजा के जगंलात के मैनेजर थे और उनकी माता श्रीमती क्षेमाणि कर्मठी महिला थी।'' (गैडी, 1998, 32) हालांकि पैतृक घर बंगाल के हुगली में था, कलाकार नंदलाल बोस को कम उम्र से ही मूर्ति कला एवं चित्रकारी में रूचि थी जिसे देखते हुए उनके माता–पिता ने उन्हें कोलकाता के कला विद्यालय में प्रवेश दिलवाया।

भारतीय चित्रकला में पुनरूत्थानवादी आंदोलन के संस्थापक अवींद्रनाथ टैगोर उनके गुरु रहे। नंदलाल ने कला के प्रति अपने समर्पण से सभी को बेहद प्रभावित किया हुआ था। उन्होंने एक विशिष्ट शैली का उपयोग करते हुए भारतीय विषयों को चित्रित करना शुरू किया। उन्होंने गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट से ड्रिग्री प्राप्त की, उपरांत अविंद्रनाथ टैगोर ने उन्हें रविंद्रनाथ टैगोर से मिलवाया। कुछ समय पश्चात् नंदलाल ने शांतिनिकेतन में विश्व भारती विश्वविद्यालय में स्थापित कला भवन का अध्ययन करने के लिए रविंद्रनाथ टैगोर के निमंत्रण को स्वीकार किया। 1930 में जब महात्मा गांधी को दांडी मार्च के दौरान गिरफ्तार किया गया था, तब नंदलाल बोस ने चित्र बनाया, जिसमें गांधी जी अपनी लाठी के साथ चलते हुए दिखाई दे रहे हैं। यहां से नंदलाल बोस की भारतीय

स्वाधीनता संग्राम में भागीदारी शुरू हुई। ''नंदलाल ने कांग्रेस अधिवेशन की पंडाल सज्जा के लिए एक महीने में 200 चित्र स्वयं और लगभग 200 चित्र अपने शिष्यों से बनवाए इन चित्रों में दैनिक जीवन से संबंधित चित्रों के दर्शन होते थे।'' (भट्नागर और चंद्रिकेष, 2001, 47) जिसको देखकर उनको संविधान के लिए चित्रकारी का कार्य सौंपा गया था उन्होंने संविधान को चित्रित करने का कार्य बड़ी ही निपूर्णता के साथ सम्पन करवाया था।

''स्वाधीनता के बाद जब भारत की संविधान सभा ने संविधान बनाने का काम पूरा किया तो उसके सदस्यों ने भ. ारतीय सांस्कृतिक विरासत को संविधान की मूल प्रति में चित्रित करने की मांग की और इस काम के लिए सभी ने सर्वसमिति से नंदलाल बोस को नियुक्त किया नंदलाल बोस और उनके शांतिनिकेतन के साथ सभी कलाकारों ने भारतीय संविधान के लिए 100 से भी अधिक चित्र तैयार किया परंतु उनमें से सिर्फ 22 चित्रों का ही चयन किया गया।''(Rathodiya, 2022, 3) क्योंकि वह भारत के निवासियों के इतिहास एवं विकास के विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करते थे। इन सब चित्रों में मोहनजोदड़ों मुहर, वैदिक गुरुकुल, रामायण और महाभारत के दृश्य, गौ. तम बुद्ध, महावीर, शिवाजी, गुरू गोविंद सिंह, टीपू सुल्तान, रानी लक्ष्मी बाई, बौद्ध धर्म व्यापार और उद्योग को बढ़ावा देने में सम्राट अशोक की भूमिका आदि शामिल है। 1954 में नंदलाल बोस को भारतीय संविधान में उनके कार्य के लिए पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया। नंदलाल और उनके सहयोगियों का स्वतंत्रता आंदोलन और गांधी जी से जो जुड़ाव था, उसी के संदर्भ में भारतीय संविधान के आलोक को देखा जानना चाहिए।

ब्योहर राम मनोहर सिन्हा

जब संविधान के लिए देशभर में तैयारी चल रही थी, तब इस बात पर चर्चा हुई, कि संविधान का पहला पृष्ठ आकृषित होना चाहिए और इसकी झलक सबसे अलग हो। ऐसे में किसी प्रसिद्ध कलाकार की आवश्यकता थी, जो इस कार्य को संपूर्ण कर सकें। उस समय देश में कला के क्षेत्र में सबसे अच्छा कार्य शांतिनिकेतन में चल रहा था, जिसका कार्यभार नंदलाल बोस संभाल रहे थे। ऐसे में संविधान के प्रमुख पृष्ठ का कार्य नंदलाल बोस को सौंपा गया लेकिन उन्होंने इस कार्य के लिए सबसे प्रतिष्ठित शिष्य राम मनोहर सिंहा का चयन किया।

''इनका जन्म 15 जून 1939 को जबलपुर में हुआ। उनका पालन पोशण ऐसे घर में हुआ जहां प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और महात्मा गांधी जवाहरलाल नेहरू, खान अब्दुल गफ्फार खान जैसे राजनीतिक हस्तियों का आना-जाना लगा रहता था। इन्हीं के कारण छोटी उम्र से ही देशभक्त की भावना को आत्मसात कर लिया।''(Pal, 2023,1)

अम्बर (2021, 163) के अनुसार संविधान के अलंकरण में जबलपुर का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राम मनोहर सिन्हा ने जिस घर परिवार में जन्म लिया वह स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदार थे। राममनोहर के पिता रघुवीर सिंह अपने मित्र क्षितिज मोहन, बनारसी दास चतुर्वेदी एवं हजारी प्रसाद दिवेदी से मिलने शांति निकेतन जाते रहते थे। और राममनोहर भी उनके साथ जाते थे। 1946 में उन्होने शांति निकेतन में रहने का फैसला किया और स्नातक और स्नातकोत्तर उपादि प्राप्त की।''

''राम मनोहर सिंहा की संपूर्ण कला यात्रा में कई चरण है, जिनमें कई महत्वपूर्ण चित्र विद्यमान हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है शांति निकेतन में चित्रकला का छात्र रहते हुए भारत के संविधान की प्रस्तावना को डिजाइन करना। हालांकि यह काम नंदलाल बसु के निर्देशन में कई छात्रों के सहयोग से संपन्न हुआ, परंतु राम मनोहर सिन्हा द्वारा किया गया संविधान के मुख्य पृष्ठ का डिजाइन उनका अत्यंत महत्वपूर्ण काम है। इस पृष्ठ की खासियत यह है कि इस पर देवनागरी लिपि से राम मनोहर सिंहा द्वारा उस शपथ को लिखा गया है, जो भारत, देश और भारतीयता की मूल अवधारणा है। इसलिए भारतीय संविधान पर उनकी कला भारतीय कला के योग का प्रतिनिधित्व करती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने संविधान के लिए 11 चित्रों को भी रचना की'' (अम्बर, 2021,164)

अम्बर (2021, 164) के अनुसार अध्ययन के दौरान उन्होंने फ़स्कों–सिक्कों में विशेशता हासिल की और प्रस्तावना चित्रण के लिए उन्होंने अंजंता, एलोरा, बाघ, बादामी, सारनाथ, महाबलीपुरम जैसी प्रतिष्ठत स्थानों का भ्रमण करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्हीं यात्राओं के द्वारा ही उन्होंने संविधान में चित्रों को चित्रित करने में भारत के समृद्ध सांस्कृतिक अतीत के प्रतीकों और तत्वों को शामिल किया।

प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा

नवगठित संविधान सभा ने पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन के प्रसिद्ध नंदलाल बोस के नेतृत्व में कलाकारों के एक समूह और जिनमें उनके शिष्य राम मनोहर सिन्हा शामिल थे, जिन्हें प्रस्तावना के चारों और समृद्ध सीमा बनाने का श्रेय दिया जाता है उनके अतिरिक्त सुलेखाक प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा ने 6 महीने में कथित तौर पर हिंदी और अंग्रेजी में लिखने का कार्य किया। प्रेम बिहारी रायज़ादा एक भारतीय सुलेख और लेखाक थे। ''इनका जन्म 17 दिसंबर 1901 दिल्ली में हुआ। उन्होंने भारत के संविधान को अपने हाथ से लिखने में अपना भरपूर योगदान दिया है। बचपन में माता–पिता की मृत्यु के उपरांत दादा राम प्रसाद सक्सेना और चाचा चतुर बिहारी नारायण सक्सेना ने पालन पोषण किया। उनके दादा एक अंग्रेजी और फ़ारसी के विद्वान थे।'';त्मतउंए 2023ए1द्ध रायजादा ने भी कैलीग्राफी अपने दादा से सीखी तथा दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज से ग्रंजुएशन करने के बाद प्रेम बिहारी कैलीग्राफी आर्ट में मास्टर हो गए। 1940 में जब भारत की संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान का प्रारूप तैयार किया जा रहा था, तब ''जवाहरलाल नेहरू ने प्रेम बिहारी रायज़ादा को मौलिक दस्. तावेज की पहली प्रति लिखने के लिए कहा था। उन्हें संविधान को फ्लोटिंग इटैलिक स्टाइल में लिखने के लिए कार्य दिया गया।''(Journo, 2022, 2)

Journo (2022, 3) के अनुसार संविधान लिखने में रायज़ादा को 6 महीने लगे। इस पूरी प्रक्रिया में उन्होंने 432 पेन होल्डर निब का इस्तेमाल किया। उन्होंने कैलीग्राफी के लिए 303 नंबर निब का इस्तेमाल किया। हिंदी सुलेख के लिए बकिंघाम से आयातित हिंदू निब का उपयोग किया था। और यह कहा जाता है, कि उन्होंने इस काम के लिए कुछ भी शुल्क नहीं लिया। 26 जनवरी 1950 को संविधान को अपनाया जाने से 2 दिन पहले संविधान सभा के सभी 284 सदस्यों ने संविधान पर हस्ताक्षर किये थे। इसके उपरांत वह लिखने के लिए मान गए, लेकिन उनकी एक शर्त थी। बड़े पैमाने पर लघु शैली में प्रस्तुत इसकी सीमाओं और चित्रों में अजंता गुफा चित्रों और बाघ चित्रों का प्रभाव है। बल्कि उन्होंने कहा कि प्रत्येक पृष्ठ पर उनका नाम और आखिरी पृष्ठ पर उनके दादा का नाम हो। 251 पन्नों के संविधान को हाथ से लिखने के बावजूद एक भी गलती या असंगति नहीं मिलना, यह अपने आप में प्रेम बिहारी रायज़ादा के उत्कृष्ट लेखनी का सर्वोत्तम प्रमाण है।

संविधान की चित्रित छवियां

- चित्रों के विशयगत विस्तार पर चर्चा करते समय, नंदलाल बोस को प्रागऐतिहासिक काल से लेकर भारत की स्वतंत्रता तक की एक विस्तृत श्रृंखला का आवरण करने के लिए सराहना की जानी चाहिए। संविधान की चित्रित छवियाँ इस प्रकार है।

- सबसे पहले अशोक के प्रतिष्ठित सिंह स्तंभ के पूरे पृष्ठ के चित्रण से आरंभ करते हुए इस संस्करण का पहला पृष्ठ पाठकों के लिए एक उत्साह पैदा करता है। पृष्ठ चारों तरफ जटिल हाशिये से घिरा हुआ है। दोनों तरफ के पैनल पर पत्ते बने हुए है। जबकि कमल ऊपरी और निचले पैनल को कवर करते हैं। उपरी पैनल में, इन कमलों को चरणबद्ध पिरामिडों से अंकित किया गया है, जबकि निचले पैनल पर कमल के गोलों की उपस्थिति यह स्थापित करती है कि कमल बहुत महत्व का फूल है। कमल भारत का राष्ट्रीय फूल है और पहले पन्ने पर उचित उपस्थिति दर्ज कराता है। (चित्र संख्या–2)

- पहले पृष्ठ के बाद प्रस्तावना का बहुत चर्चित अक्सर देखा जाने वाला पृष्ठ है, जो आगामी चित्रों को कलात्मक रूप से संतुलित करने के लिए अत्यधिक अलंकृत है। संविधान की भाषा में, प्रस्तावना उसके बाद आने वाले पृष्ठों के आधार के रूप में कार्य करती है। हाशिय में चार जानवरों को चित्रित किया गया है, जिसमें से बैल, हाथी, दौड़ता घोड़ा और बाघ है। बैल पौरूष और कृषि का प्रतीक है, तो हाथी वैभव और राजशाही का प्रतीक है। इन जानवरों की शांति का महत्व तब बढ़ जाता है, जब उन्हें दौड़ते हुए घोड़े के सामने देखा जाता है, जो युद्ध का प्रतीक है और एक और आगे बढ़ता हुआ बाघ है, जो वीरता का प्रतिनिधित्व करता है और राष्ट्रीय पशु भी है। इस पृष्ठ में अन्य तत्वों में राष्ट्रीय पक्षी मोर, कमल के साथ-साथ पशु बाघ की उपस्थिति है जो एक साथ जुड़े हुए है। इसके विपरीत, इसके बाद आने वाले पेज़ अलग-अलग डिज़ाइन सिद्धांतों और विचारों को ले जाते है। (चित्र संख्या-3)

- प्रस्तावना के बाद वाला पृष्ठ संविधान की छवियां में पहला भाग सिंधु घाटी के लोकप्रियशील सील बैल से शुरू होता है। यह प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता की बुल सील का सचित्र प्रतिनिधित्व है। नंदलाल बोस ने प्रारंभिक अधिनियम में सिंधु लिपि के कुछ अक्षरों के साथ बुल सील का चित्रण रखा। यह कूबड़ वाला बैल सिंधु क्षेत्र के कई अनुष्ठानों और सजावटी कलाओं से एक आवर्ती विषय है जो शहरों के उदय से पहले चित्रित मिट्टी के बर्तनों और मूर्तियों के रूप में दिखाई देता था और आज भी जारी है। बैल मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के सबसे शक्तिशाली कबीले या शीर्ष अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करता है इस प्रकार बोस की बुल सील छवि का सम्मिलन, जो स्पष्ट रूप से भाग एक की शुरुआत का प्रतीक है, भारत के गौरवशाली अतीत का संदर्भ है। छवि की उपस्थिति भारत के नागरिकों के लिए एक अनुस्मारक है, कि हम एक ऐसे समाज का हिस्सा रहे है। (चित्र संख्या-4)

- भारत में नागरिकता का भाग भारत के वैदिक युग के रूप में दर्शाया गया है, यह वह समय था जब मानवीयत शक्तियां अग्नि, इंद्र व सूर्य की पूजा करती थी। इन्हीं को कलात्मक प्रस्तुति के माध्यम से दर्शाया जाता था। (चित्र संख्या-5)

- महान महाकाव्यों को श्रद्धांजलि के रूप में भाग 4, जो संविधान की निदेशक राज्य नीति पर आधारित है, महाभारत के एक सचित्र दृश्य से शुरू होता है। कृष्ण अर्जुन वार्तालाप को अक्सर उद्धृत किया जाता है। जैसा की नंदलाल बोस के चित्रण में दर्शाया गया है, दृश्य में पाठक एक भ्रमित अर्जुन का मुकाबला करता है, जो अपने ही रिश्तेदारों के खिलाफ युद्ध लड़ने से झिझक रहा है। जिससे उसके सारथी कृष्ण ने समझाया है, कि अन्य युद्धों के विपरीत कुरुक्षेत्र की लड़ाई धार्मिकता की लड़ाई है। भारतीय संस्कृति में महाकाव्य का महत्वपूर्ण स्थान है परंपराओं और नैतिकता के संरक्षण भारतीयता के मुद्दे को संबोधित करते समय रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य का ज्यादातर उल्लेख किया जाता है। इसलिए कृष्ण अर्जुन वार्तालाप और राम का अपने ही राज्य से निर्वाचन शायद पाठकों के लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है, कि किसी को एक बड़े उद्देश्य के लिए बलिदान देना होगा। मौलिक अधिकारों में राम, लक्ष्मण और सीता का चित्रण किया गया है।(चित्र संख्या-6,7)

- राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति से संबंधित नियमों के भाग में बुद्ध के ज्ञानोदय की छवि दी गई है, यह वह समय था, जब ज्ञानोदय शब्द को मानव जाति की मासूमियत से चेतन की ओर जागृति के रूप में भी समझा जा सकता था। आठवीं शताब्दी तक आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन उन्नत हो चुका था और वह अपने मूल में ब्राह्मण से अधिक क्षत्रिय थे। (चित्र संख्या-8)

- गुप्त काल भारत का स्वर्ण युग था। शानदार बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास का संयोजन कला और साहित्य की विशेशता थी। अजंता की पेंटिंग कालिदास के ग्रंथ आर्यभट्ट की गणितीय प्रतिभा यह सभी गुप्त काल के हिस्सा थे, उस समय गुप्त काल का हिस्सा थे और भारत सकल घरेलू उत्पाद का 25: योगदान दे रहा था और 1000 वर्षों तक नंबर वन स्थान पर रहा है। जो नालंदा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करती

है, जहां संस्कृतियों का मिश्रण स्थल था। (चित्र संख्या–12)

- दक्षिण में भी प्रसिद्ध कला को चिन्हित किया गया, जिसमें अर्जुन की तपस्या, महाबलीपुरम और नटराज चोलकास्य माध्यम में दर्शाया गया है। यह सभी दृश्य इतिहास के विषय में दर्शाते हैं। अकबर के दरबार का एक दृश्य जिसमें मुगल शासन को दर्शाया गया है, जो अंतत: शिवाजी और गुरु गोविंद सिंह के मराठा और सिख प्रतिपादन की ओर ले जाता है। शिवाजी और सिख शासन ने अंतत: मुगल शासन को कमजोर कर दिया और यूरोपीय व्यापार ने उसे स्थान को जन्म दिया जिसे हम शाही शासन के रूप में जानते हैं।(चित्र संख्या–13)
- स्वतंत्रता संग्राम को रानी लक्ष्मीबाई और टीपू सुल्तान से लेकर गांधी के दांडी मार्च तक नायकों की एक श्रृंखला द्वारा दर्शाया गया है।

निश्कर्ष

अंत: जिस प्रकार कला ने हर क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उसी प्रकार चित्रकला ने संविधान को निर्मित करने में सहयोग दिया है। जिस प्रकार संविधान स्वतंत्र रूप से कार्य की आज्ञा देता है, उसी प्रकार से कलाकार स्वतंत्र रूप से अपने भावों को प्रकट करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नन्दलाल बोस ने चित्रित इतिहासकार प्रस्तुत किया, जबकि डॉ. अंबेडकर ने वर्तमान और भविष्य के नागरिकों द्वारा बनाए जाने वाले दिशा निर्देश दिए। पाठ और चित्र अतुलनीय है, क्योंकि दोनों राष्ट्र निर्माण के विभिन्न मुद्दों को संबोधित और उजागर करती है। पाठ मौलिक अधिकारों और निदेशक राज्य नीतियों पर चर्चा करता है, जबकि छवियां पौराणिक और लोकप्रिय मान्यताओं से उलझी ऐतिहासिक घटनाओं का कालानुक्रमिक मिश्रण पेश करती है।

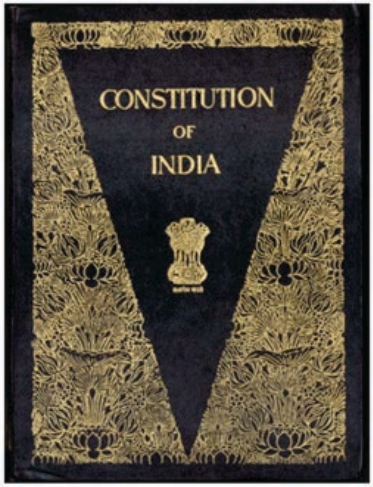

चित्र संख्या–1

चित्र संख्या–2

चित्र संख्या–3

चित्र संख्या–4

चित्र संख्या–5

चित्र संख्या–6

चित्र संख्या–7

चित्र संख्या–8

चित्र संख्या–9

चित्र संख्या–10

चित्र संख्या–11

चित्र संख्या–12

चित्र संख्या–13

चित्र संख्या–14

संदर्भ सूची:

अम्बर, वि. (2021, अक्तूबर– दिसम्बर). ब्यौहार राममनोहर सिन्हा का चित्रकला में अवदान. विश्वरंग अंत. र्राष्ट्रीय विश्व रंग की त्रैमासिकपत्रिका, अंक 3, 163–167. अम्बर, वि. (2021, अक्तूबर– दि. सम्बर). ब्यौहार राममनोहर सिन्हा का चित्रकला में अवदान. विश्वरंग अंतर्राष्ट्रीय विश्व रंग की त्रैमासिकपत्रिका, अंक 3, 163–167.पृ.163

वहीं पृ._164

वहीं पृ._164पृ.163

वहीं पृ._164

वहीं पृ._164

गैडी, स. (1998). नंदलाल बोस. श्रोत्रिय, श. (संपादक). बंगाल चित्रशैली और उसके प्रमुख चित्रकार, (प्रथम संस्करण, 32–42). चित्रायन प्रकाशन.पृ.32

Bhatnagar, N., & Chandrikesh, J. (2001). Bengal Shailli Ki Chitrakala (1st ed.). Ananya Prakashan.p47

Journo, V. (2020, December 17). प्रेम बिहारी नारायण जन्मदिन विशेष: संविधान के असली हक़दार जिन्हें इतिहास निगल गया. https://falanadikhana.com/prem-bihari-narayan-untold-story-who-wrote-indian-constitution/p-2

ibid, 3

Mustafi, S. (2021, November). Constitutionally Imagined: A Study of the Illustrations in the Constitution of India. Shahapedia. https://map.sahapedia.org/article/Constitutionally-Imagined:-A-Study-of-the-Illustrations-in-the-Constitution-of-India/11540p-2

ibid, 2

Pal, S. S. (2023, June 15). Beohar Rammanohar Sinha: Illustrator of the Indian Constitution. The Talented Indian. https://www.thetalentedindian.com/beohar-rammanohar-sinha-illustrator-of-the-indian-constitution/ p-1

Rathodiya, M. (2022, November 26). Paintings in Indian Constitution: कौन थे नंदलाल बोस, जिन्होंने संविधान में उकेरी भारतीय सांस्कृतिक विरासत. One India.

https://hindi.oneindia.com/news/features/who-was-nandalal-bose-master-of-paintings-the-indian-constitution-730291.html p-3

Shahare, M. L. (1987). Dr. Bhimrao Ambedkar his life and work. C.N.Rao.p-6-11

Verma, A. (2023, February 20). अपने हाथों से संविधान लिखने वाले प्रेम बिहारी नारायण रायजादा की जीवनी. Information Junction.

https://informationjunction.in/prem-bihari-narayan-raizada-biography-in-hindi/.p-1

Image source

चित्र संख्या–1 https://www.theheritagelab.in/constitution-india-art/

चित्र संख्या–2 https://abirpothi.com/remembering-the-artist-who-depicted-indian-art-in-indian-constitution-with-pictures/

चित्र संख्या–3 https://abirpothi.com/remembering-the-artist-who-depicted-indian-art-in-indian-constitution-with-pictures/

चित्र संख्या–4 https://www.loc.gov/item/57026883

चित्र संख्या–5 https://www.loc.gov/item/57026883

चित्र संख्या–6 https://www.loc.gov/item/57026883

चित्र संख्या–7 https://www.loc.gov/item/57026883

चित्र संख्या–8 https://www.loc.gov/item/57026883

चित्र संख्या–9 https://www.loc.gov/item/57026883

चित्र संख्या–10 https://www.loc.gov/item/57026883

चित्र संख्या–11 https://www.theheritagelab.in/constitution-india-art/

चित्र संख्या–12 https://www.theheritagelab.in/constitution-india-art/

चित्र संख्या–13 https://www.theheritagelab.in/constitution-india-art/

चित्रसंख्या–14 https://www.thebetterindia.com/128870/nandalal-bose-art-india-constitution/